कुशलायतन

दिसंबर 2014

वर्ष - 6 अंक - 2 web : www.kushlayatan.com आर.एन.आई. NO.: RAJHIN 2009/31656

अभय-निर्भय एवं सत्य

सहिओ दुक्खमत्ताए पुट्ठो नो झंझाए।

- आचारांग 1/3/3

सत्य साधना का साधक सब ओर दुःखों से घिर जाने पर भी घबराता नहीं है, विचलित नहीं होता है।

सत्य साधना साधक-साधिकाओं को अभय-निर्भयता की ओर गतिमान करती है। भयभीत तो वो होता है जो किसी सहारे, किसी दम, किसी बल के द्वारा खड़ा हो। बैशाखी पर हाथ टिका कर चलने वाले को भय सता सकता है। यदि उसका सहारा बनी बैशाखी उसके साथ नहीं रही तो वह ठीक प्रकार से खड़ा कैसे रह पायेगा ? जहां सहारा मिल जाता है वहां उस सहारे के छूट जाने का भय लगा ही रहता है। सत्य साधना में जब साधक सांस-सांस को देखने का काम करता है तब वह किसी दूसरे के सहारे तो खड़ा नहीं होता। वह तो खुद के सांस पर काम कर रहा होता है। ऐसी अवस्था में उसे भय किसका होगा? वह तो अभय बनता चला जाता है। निर्भयता की ओर सहज बढ़ जाने का कार्य सत्य साधना में होता रहता है। साधना में तरह-तरह की परेशानियां आती हैं, साधक उच्चाटन, बेचैनी, घबराहट से घिर जाने पर भी अभय रहता है। विचलित नहीं होता।

सत्य साधना की जब शुरुआत साधक करता है तो अनुभव में तरह- तरह के प्रसंग आने लगते हैं। प्रसंग मन को लुभाने वाले भी होते हैं और कष्ट पहुंचाने वाले भी। अब यदि ऐसा हो जाए और ऐसा न हो की चाहत भय के रूप में आती हैं। सत्य साधना द्वारा व्यक्ति अभय-निर्भय रहकर अपने विकारों को हटाता है, साथ ही नये विकारों को मन के पास फटकने नहीं देता है। निरन्तर-निरन्तर अभ्यास से मन विकार मुक्त होने लगता है। जैसे-जैसे विकारों से मन मुक्त होता जाता है, वैसे-वैसे मन शुद्ध होता जाता है। शुद्ध मन का व्यक्ति सदाचारी होता है।

आज अनेकानेक राष्ट्र-देशों के अगुआ जन-प्रतिनिधियों की आंखों में एक सपना है - सुन्दर, समृद्ध, स्वस्थ एवं सुखी संसार का। लम्बे समय से स्वर उठ रहे हैं कि आखिर दुनिया में खुशहाली आये तो कैसे, विश्व समुदाय का चेहरा खिले तो कैसे? वह कौन सा मार्ग है जो इंसान को इंसान बनाए रखे? अपने लिए ही नहीं, अपितु दूसरों के लिए भी अच्छा सोचे। इसके लिए सत्य साधना की आवश्यकता है, हर खास और आम को। सत्य साधना करने वाले साधकगण अपना व्यक्तित्व निखारते आ रहे हैं। वह इस विधि को करते-करते अपने आप को नियंत्रित करना सीख जाते हैं। अपने चंचल मन पर काबू करना भी उन्हें आ जाता है। ऐसे व्यक्ति परिस्थिति, प्रसंग, घटना से ना तो आसक्ति रखते हैं ना ही दुर्भावना। साधना सीखा देती है कि निर्भय कैसे रहा जाए । भय ही वह विकार है जो दूसरे कई विकारों को मन में जन्म देता है। यहां तो सब कुछ आजमाकर देखना है। हर पल बदलता अनुभव। अभी क्या था, अभी क्या है। अनुभव को देख कर, उस पर तटस्थ रहना सीखाया जाता है। स्थितियां बदल रही हैं, पर प्रज्ञावान बने रहो।

सत्य साधना की हर व्यक्ति को आवश्यकता है। क्योंकि संसार को सुखमय बनाने में हर व्यक्ति की अपनी महत्ता है। हर व्यक्ति इसे आजमाकर देखे। निराशा, आशा में बदल जायेगी। दुःख, सुख में परिवर्तित हो जायेगा। अंधेरा हारेगा, प्रकाश जीतेगा। विकार समाप्त होंगे, मन की शुद्धता बढ़ती जायेगी। तब हरेक के मन में यही जयघोष गूंजेगा -

सबका मंगल हो.... सबका कल्याण हो।

दीर्घकालीन सत्य साधना शिविर सौभाग्य का अवसर है- श्री पूज्य श्री जिनचंद्र सूरिजी महाराज साहब

नाल, 26 नवम्बर। दीर्घकालीन सत्य साधना सौभाग्य का अवसर है। दस दिवसीय सत्य साधना शिविर के अभ्यस्त होते - होते जब साधक-साधिकाएं बीस दिवसीय तथा तीस दिवसीय सत्य साधना शिविर करता है तो उन्हें साधना को ओर अच्छी तरह समझने का अवसर मिलता है। लम्बी अवधि के शिविरों में सभी सदाचार और तमाम गुणों को खूब-खूब बढ़ाने का मौका मिलता है। आप सभी ने बड़े धैर्यपूर्वक दीर्घकालीन शिविर में भाग ही नहीं लिया अपितु इन सभी दिनों के हर पल, हर क्षण का सदुपयोग भी किया। अब आप साधना के इसी स्वरूप को जीवन व्यवहार में उतारने का जतन-प्रयत्न करें। सत्य साधना संवारती है मनुष्य जीवन को। यही तो पुरातन पद्धति है जो साधक-साधिकाओं को साधना पथ पर चलते रहने पर उनके मध्य विद्यमान असंख्य गुण-विशेषताओं को प्रबल बनाती जाती है। जब गुण-अच्छाई सुदृढ़ होती है तो मनुष्य का जीवन संवरने लगता है। अवगुण - विकारों से मनुष्य मन को छुटकारा मिलता जाता है। ऐसे जीवन से एक अलग ही सुगंध चारों ओर बिखरती चली जाती है। जब कोई सुगंध अपनी महक से वातावरण को महकाती है तो अनेकानेक जन लाभान्वित होने लगते हैं। हर काल में जिस-जिस साधक ने साधना को अपनाया है, अपना खूब-खूब भला किया है। अपने जीवन को संवारा है। यह उद्‌गार परम पूज्य गुरुदेव जैनाचार्य श्री पूज्य श्री जिनचंद्र सूरिजी महाराज साहब ने कुशलायतन में आयोजित 20 एवं 30 दिवसीय दीर्घकालीन सत्य साधना शिविर समापन अवसर पर व्यक्त किए। इस शिविर में कोलकाता, बीकानेर, मध्य प्रदेश राजस्थान के साधक-साधिकाओं ने लाभ प्राप्त किया। समापन दिवस पर सभी को गुरुदेव जैनाचार्य श्री पूज्य श्री जिनचंद्र सूरिजी महाराज साहब ने आशीर्वाद दिया।

अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे।
से केयणं अरिहए पूरइत्तए ।

-आचारांग 1।3।2

अर्थ - यह मनुष्य अनेक चित्त है, अर्थात् अनेकानेक कामनाओं के कारण मनुष्य का मन बिखरा हुआ रहता है। वह अपनी कामनाओं की पूर्ति क्या करना चाहता है, एक तरह से छलनी को जल से भरना चाहता है।

कुशलायतन में नवनिर्माण कार्यों की झलक

निर्माणाधीन डायनिंग हॉल

निर्माणाधीन साधना लाइब्रेरी

साधना कुटिया

मैत्रीभाव

कौशल नरेश बड़े ही दयालु, करूणामय, मैत्रीभावी राजा थे। उनका राज्य बड़ा ही समृद्ध और कुशल था। सारे राज्य में ही नहीं अपितु आसपास के कई राज्यों में उनकी ही तारीफ के गुणगान गाये जाते, कोई उनकी शूरवीरता का बखान करता तो कोई मैत्रीभावी हृदय की। परन्तु जहाँ अच्छाई होती है वहाँ बुराई भी होती है। काशी नरेश के राज्य में भी कौशल नरेश के गुणगान गाये जाते थे। तो यह सब काशी नरेश को खटकने लगा। उसने कौशल नरेश के खिलाफ एक योजना बनाई, उसने बड़ी सेना लेकर कौशल नरेश पर आक्रमण कर दिया। और कौशल नरेश हार गये, उन्हे जंगल जाना पड़ा। काशी नरेश ने सोचा अब सभी कौशल नरेश को भूल जाएंगे और मेरी ही शूरवीरता की तारीफ होगी। परन्तु हुआ बिल्कुल विपरीत। अब भी राजा कौशल के बारे में ही चर्चा होती रही, काशी नरेश के मन में घृणा और भी बढ़ गयी। उसने एक और योजना बनाई, कौशल नरेश को जान से मार देने की। उसने घोषणा करा दी कि जो भी कौशल नरेश को मेरे पास लेकर आएगा मैं उसे 1000 स्वर्ण मुद्राएं उपहार में दूँगा। इधर कौशल नरेश जंगलों मे भटक रहे थे, न खाने की कोई व्यवस्था और न ही कोई रहने की, फिर भी मन में कोई वैर भाव नहीं था। एक वृद्ध व्यक्ति कौशल नरेश के पास आया और कहने लगा-क्या आप कौशल नरेश के पास जाने का रास्ता बता सकते है? अब केवल वो ही मेरी मदद कर सकते हैं, मेरी बेटी की शादी है, और मेरे पास धन नहीं है। कौशल नरेश ने सोचा मैं इसकी मदद कैसे करूं मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। फिर कौशल नरेश को घोषणा के बारे में याद आया। उसने वृद्ध व्यक्ति से कहा आप मुझे काशी नरेश के पास ले चलो वह आप को 1000 स्वर्ण मुद्राएं उपहार में देंगे। वृद्ध व्यक्ति ने ऐसा ही किया। करुण हृदय से ओतप्रोत कौशल नरेश ने वहाँ पहुँचकर कहा - यह व्यक्ति मुझे लाया है, आप इन्हें उपहार दे दीजिए और मुझे मृत्यु दण्ड दे दीजिए। मैत्री भरे इन शब्दों से काशी नरेश का मन पिघल गया और उसने कौशल नरेश से माफी मांगी।

शिक्षा - हमारे मन में इस तरह मैत्री भाव होना चाहिए कि हम दूसरों का हित करते -करते यदि स्वयं का अहित भी हो तो भी दूसरों के हित के कार्य करते रहें।

जिन्दगी इम्तहान लेती है

कभी खुशियों का सामान देती है,
कभी गम का विष पान देती है,
यातना की यूनिवर्सिटी में रहकर
जिन्दगी इम्तहान लेती है।

कभी देती है पीपल की छाँव का अहसास,
तो कभी लू के थपेड़ों से सहलाती है,
जब कोई करता है दृढ़ निश्चय
तब जिन्दगी इम्तहान लेती है।

इस दुनिया में आदमी को दुख कहाँ नहीं,
वह कौन सी जमीन है जहाँ आसमाँ नहीं,
जब हिम्मत न हारे कोई अपनी
तब जिन्दगी इम्तहान लेती है।

जीवन में कुछ करना है तो
काँटों पर चलना होगा,
पास करना है अगर जिन्दगी का इम्तहान तो
गिरकर उठना और फिर संभलना होगा।

अब थोड़ा हँस लेते हैं

एक धनी आदमी के पैर बहुत बड़े थे। उसे आंखों से भी कम दिखाई देता था।

एक बार वह अपने नौकर रहीम को लेकर जूते खरीदने गया। लेकिन जूते का बड़े से बड़ा साइज भी उसके पैर में फिट नहीं हो रहा था। अचानक एक जूता उसके दाहिने पैर में आ गया। वह खुशी से चिल्लाया, रहीम यही खरीद ले। पैर में बिल्कुल फिट हो गया है।

नौकर रहीम अदब से बोला, 'सरकार ! आपने जूते का डब्बा पहन लिया है।'

सत्य साधना भावी शिविर

कुशलायतन
नाल, बीकानेर

आगामी सत्य साधना शिविर

21-12-2014 से 01-01-2015

01-01-2015 से 04-01-2015 (बाल शिविर)

21-01-2015 से 01-02-2015

21-02-2015 से 04-03-2015

21-03-2015 से 01-04-2015

21-04-2015 से 02-05-2015

21-05-2015 से 01-06-2015

21-06-2015 से 02-07-2015

09-07-2015 से 20-07-2015(नागेश्वर शिविर)

01-08-2015 से 11-08-2015(गुरुपूर्णिमा शिविर)

21-08-2015 से 01-09-2015

09-09-2015 से 16-09-2015(पर्युषण शिविर)

21-09-2015 से 02-10-2015

दस दिवसीय शिविर में 18 साल से ऊपर के सभी महिला-पुरुष शामिल हो सकते हैं। बाल शिविर में 8 से 18 वर्ष के सभी बालक-बालिकाएं शामिल हो सकते हैं। स्वयं शिविर केवल उनके लिये है, जिन्होंने कम से कम एक दस दिवसीय शिविर कर लिया हो। दस दिवसीय शिविर, बाल शिविर एवं स्वयं शिविर के लिए कम से कम पंद्रह दिन पूर्व बुकिंग अवश्य कराएं। 20-30 दिवसीय शिविरों के लिए कम से कम एक महीना पूर्व बुकिंग अवश्य करावें। जो कम से कम पाँच 10 दिवसीय शिविर कर चुके हैं और प्रतिदिन 2 घण्टे साधना पिछले एक वर्ष से अधिक समय से करते आ रहे हैं ऐसे साधक-साधिकाएँ 20 या 30 दिन के लिये बुकिंग करा सकते हैं। बुकिंग नीचे लिखे प्रकारों में से किसी एक प्रकार से करा सकते हैं -

- फोन : 0151-2886713 की Answering Machine पर अपना नाम, टेलीफोन/मोबाइल नम्बर और जिस कोर्स में शामिल हों उस कोर्स के माह और तारीख की सूचना देकर।
- E-mai : kushlayatan@gmail.com
- web: www.kushlayatan.com से फार्म भरकर
- पोस्ट अथवा कोरियर कर
- 0151-2886611 पर फैक्स कर

- सम्पर्क सूत्र -

सत्यम् शोध संस्थान, कुशलायतन
पो. नाल, बीकानेर - 334001 (राज.)
0151-2886731, 09829173801

बाल शिविर
कुशलायतन, नाल
में हर शनिवार को सुबह 9 से 11 बजे
8 से 18 वर्ष की आयु के सभी बालक- बालिकाएं
बाल शिविर में शामिल हो सकते हैं।
सम्पर्क सूत्र - 09929090893, 09829169991

एक-दिवसीय सत्य साधना शिविर
कुशलायतन, नाल
में हर रविवार को
प्रातः 9 से दोप. 3.00 बजे
उनके लिए जिन्होंने कम से कम एक
दस-दिवसीय सत्य साधना शिविर कर लिया है
शाम 3.00 से 4.00 बजे उनके लिए भी
जिन्होंने दस दिवसीय
सत्य साधना शिविर नहीं किया है।
सम्पर्क सूत्र - 09929090893, 09829169991

एक-दिवसीय सत्य साधना शिविर सभी के लिए
सत्य साधना केन्द्र, खेयादा-कोलकाता
में हर रविवार को
प्रातः 10 से दोप. 2.00 बजे
सम्पर्क सूत्र - 09836488880, 09239563511

बाल शिविर
रंग सूरि पौषाल, कोलकाता
हर शनिवार को दोप. 2 से 4 बजे
8 से 18 वर्ष की आयु के सभी बालक- बालिकाएं
बाल शिविर में शामिल हो सकते हैं।
सम्पर्क सूत्र - 09831389009, 09062651212

सत्य साधना (सभी के लिए)
हर सोमवार को सायं 6.00 से 7.00 बजे
स्थान : सी.ई. 107 साल्टलेक सिटी, कोलकाता

हर शुक्रवार को सायं 6.00 से 7.00 बजे
स्थान : श्री सदन 13, वाटकिंग्स लेन हावड़ा
सम्पर्क सूत्र - सुरभि डागा - 09339917278

हर रविवार को सुबह 7.00 से 8.00 बजे
स्थान : ब्लॉक A-204, बांगुर एवेन्यू, कोलकाता
सम्पर्क सूत्र - आदित्य कोठारी - 09874255555

बड़ा उपासरा
रांगड़ी चौक, बीकानेर
में होने वाले कार्यक्रम
प्रतिदिन सामूहिक साधना
प्रातः 5.30 से 6.30 बजे
प्रातः 8.00 से 9.00 बजे
दोप. 2.30 से 3.30 बजे
सत्य साधना (सभी के लिए)
सायं 6.00 से 7.00 बजे
एक-दिवसीय सत्य साधना शिविर
में हर रविवार को
दोपहर 12 से सायं 6 बजे
उनके लिए जिन्होंने कम से कम एक
दस-दिवसीय सत्य साधना शिविर कर लिया है
सायं 6 से 7 बजे उनके लिए भी
जिन्होंने दस दिवसीय
सत्य साधना शिविर नहीं किया है।

दस दिवसीय सत्य साधना स्वयं शिविर बड़ा उपासरा में करने के लिये एक माह पूर्व बुकिंग कराएं।

सम्पर्क सूत्र - 09929328856, 09252060857

बाल शिविर
बड़ा उपासरा
रांगड़ी चौक, बीकानेर
हर रविवार को सुबह 9 से 11 बजे
8 से 18 वर्ष की आयु के सभी बालक- बालिकाएं
बाल शिविर में शामिल हो सकते हैं।
सम्पर्क सूत्र - 09929328856, 09252060857

एक-दिवसीय सत्य साधना शिविर
कुशल कॉम्प्लेक्स, महिदपुर
में हर सोमवार को
सुबह 5 से11 बजे
उनके लिए जिन्होंने कम से कम एक
दस-दिवसीय सत्य साधना शिविर कर लिया है
दोप.11 से 12 बजे उनके लिए भी
जिन्होंने दस दिवसीय
सत्य साधना शिविर नहीं किया है।
सम्पर्क सूत्र- 09425431474, 09424830612

बाल शिविर
कुशल कॉम्प्लेक्स, महिदपुर
हर रविवार को प्रातः 8 से 10 बजे
8 से 18 वर्ष की आयु के सभी बालक- बालिकाएं
बाल शिविर में शामिल हो सकते हैं।
सम्पर्क सूत्र -09425431466, 09685332221

RNI Regd. No. RAJHIN 2009/31656 डाक पंजीयन संख्या : बीकानेर/120/2013-2015

निजता के सामीप्य का
मधुरिम आमंत्रण

परम दिव्य आत्मन्...
जंगम युग प्रधान, वृहत् भट्टारक,
खरतरगच्छाधिपति,
जैनाचार्य 1008 श्री पूज्यजी

श्री जिनचन्द्र सूरिजी महाराज साहब

के पावन सान्निध्य में

दस दिवसीय सत्य साधना शिविर

का आयोजन

09 जुलाई 2015, गुरुवार से 20 जुलाई 2015, सोमवार तक

नागेश्वर तीर्थ

जिला-झालावाड़ (राज.) में हो रहा है।

इसके लिए नाम लिखाने की अंतिम तिथि 20 जून 2015 है।

मोबाइल नं. : 94253 14790, 94248 30612
94254 31466, 94259 17974

• e-mail : kushlayatan@gmail.com • web : www.satyasadhna.com / kushlayatan.com

प्रेषक
सत्यम् शोध संस्थान
कुशलायतन
नाल-बीकानेर (राज.) पिनकोड 334001

प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक संगीता बोथरा द्वारा सत्यम् शोध संस्थान के लिये सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, शिवबाड़ी रोड, बीकानेर से मुद्रित तथा कुशलायतन, नाल-बीकानेर से प्रकाशित।

RNI Regd. No. RAJHIN 2009/31656

डाक पंजीयन संख्या : बीकानेर/120/2013-2015
प्रकाशन : प्रतिमाह दिनांक 15-16

पुस्त-प्रेष्य

श्री